परमेश्वर एवं ईश्वर

विषयसूची

अध्याय

१. परमेश्वर एवं ईश्वर शब्दोंके अर्थ ९

२. परमेश्वर १०

३. ईश्वर १६

परमेश्वर

अनुक्रमणिका

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ११

२. परमेश्वरका वाचक ११

३. विशेषताएं १२

३ अ. सर्वव्यापी १२

३ अ १. परमेश्वर सर्वत्र होना १२

३ अ २. सर्वत्र व्याप्त होनेपर भी शेष १२

३ अ ३. सर्वव्यापी होकर भी सबसे पृथक तथा परिपूर्ण १२

३ आ. शाश्वत एवं अविनाशी १३

३ इ. सर्वज्ञ १३

३ ई. शांत अथवा तृप्त करनेवाले १३

३ उ. निंराकार १३

३ ऊ. अपरिवर्तनीय १३

३ ए. अप्रगट शक्ति १३

३ ऐ. निर्गुण १३

३ ओ. सगुण एवं निर्गुण १३

३ औ. केवल समष्टिरूप १३
३ अं. उदासीन १४
४. परमेश्वर एवं अन्य १४
४ अ. करावनहार परमेश्वर, कर्ता ईश्वर और भोक्ता जीव है १४
४ आ. परमेश्वरकी अपेक्षा संत अपने लगना १४
५. साधकको होनेवाली अनुभूति १५

ईश्वर

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १८
२. कुछ अन्य नाम १८
३. व्याख्या १८
४. विशेषताएं एवं काय १८
४ अ. ईश्वरमें विद्यमान परमेश्वरकी विशेषताएं १९
४ अ १. सर्वज्ञ १९
४ अ २. शांत अथवा तृप्त करनेवाले १९
४ अ ३. केवल समष्टि रूप २०
४ आ.अन्य विशेषताएं २०
* कार्यसे संबंधित विशेषताएं २०
अ. ईश्वर एवं सृष्टिकी उत्पत्ति, स्थिति और लय २०
आ. अस्तित्वसे कार्य करनेवाले २०
इ. सृष्टिमें स्वयं ही वास्तव्य करनेवाले २१

* साकार अथवा निराकार होनेवाले २२
* निराकार ईश्वर साकार क्यों होते हैं ? २२
* ईश्वरकी खोज कर पाना भक्तोंके लिए सरल हो २२
* भक्तोंकी श्रद्धा बढाने एवं प्रशंसा करने हेतु २२
* भक्तिसुखके लिए २३
* भक्तोंके रक्षणार्थ २३
* किस रूपमें साकार होते हैं ? २३
* आयुधोंके आकार एवं प्रयोग २४
* गुणाश्रयी २५
* 'मैं'पनके भानरहित, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापी २६
* ईश्वरलीलाचरित्रोंको पसंद करनेवाले एवं उनका पठन करनेवालोंपर प्रसन्न होनेवाले २७
* भक्तवत्सल २७
* भक्तोंकी अहर्निष सेवा करनेवाले २९
* गुप्तरूपसे कार्य करनेवाले २९
* शक्तिका न्यूनतम उपयोग कर कार्य करनेवाले २९
* अपनेसे अधिक महत्त्व भक्तोंको देनेवाले ३०
५. निवासस्थान ३१
६. ईश्वर एवं मनुष्य ३२
* ईश्वर मनुष्यसे छिपकर क्यों बैठे हैं ? ३२
* ईश्वरको क्यों खोजें ? ३२
* ईश्वर एवं मानवका प्रारब्ध ३३
७. साधकको होनेवाली अनुभूति ३६
७ अ. साधकके स्तरके अनुसार उसे देवत्वका बोध होना ३६

७ आ. बिंब-प्रतिबिंब न्याय ३६

७ इ. दर्शन ३७

७ ई. आनंद ३७

८. आकाशवाणी - ईश्वरका मनुष्यसे संपर्क ३७

* कितने महत्त्वपूर्ण समाचार प्रसारित होते हैं ? ३७

* आकाशवाणी कौन सुन पाता है ? ३८

* आकाशवाणी सुन पाना किसपर निर्भर करता है ? ३८

९. ईश्वर एवं अन्य ४०

९ अ. ईश्वर एवं संत ४०

९ आ. ईश्वर एवं गुरु ४१

भूमिका

जिनके द्वारा हमारी उत्पत्ति हुई एवं जो चराचरमें समाए हैं, ऐसे ईश्वरके प्रति आकर्षण एवं उत्सुकता मनुष्यजातिको अनादिकालसे रही है । परमेश्वर, ईश्वर, अवतार एवं देवता जैसे शब्दोंसे सामान्य व्यक्ति परिचित होते हैं; परंतु विभिन्न स्थानोंपर विविध अर्थोंसे ऐसे शब्द व्यक्त किए जाते हैं, जिस कारण कई लोगोंको दुविधा होती है । इसके अतिरिक्त, जिज्ञासु उपासकोंके मनमें परमेश्वर, ईश्वर, अवतार एवं देवताओंके संदर्भमें अनेक प्रश्न उठते हैं, उदाहरणार्थ परमेश्वर यदि निर्गुण और निराकार हैं, तो वे सगुणरूपमें कैसे दर्शन देते हैं ? ईश्वर यदि एक हैं, तो उनके विविध रूपोंके वर्णन कैसे पाए जाते हैं ? संकल्पमात्रसे सबकुछ करनेकी क्षमता ईश्वरमें है, तो भक्तोंके रक्षणार्थ विविध अवतार धारण करनेका क्या प्रयोजन है ? जब देवता मनुष्योंके समान आपसमें झगडते हैं, राक्षसोंसे लडते हुए पराजित भी होते हैं, फिर उनकी उपासना क्यों करनी चाहिए ? इन जिज्ञासुओं की शंकाओंका समाधान हो, साथ ही परमेश्वर, ईश्वर आदि शब्दोंसे संबंधित दुविधाएं दूर हों, इस हेतु प्रस्तुत ग्रंथमें स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर एवं ईश्वर वास्तवमें क्या हैं । (इस ग्रंथकी पृष्ठसंख्या अधिक न हो जाए, इस कारण अवतार एवं देवताओंके संदर्भमें उत्पन्न होनेवाले प्रश्नोंका निराकरण यहां न करते हुए, हमारे 'देवता' एवं 'अवतार' इन दो भिन्न ग्रंथोमें प्रकाशित किया जाएगा ।)

किसीके संबंधमें, उदा. किसी देशके अपरिचित व्यक्तिके गुणोंकी जानकारी न हो, तो उसके प्रति हममें प्रेम नहीं उत्पन्न होता । उसी प्रकार परमेश्वर एवं ईश्वर की जानकारी न हो, तो उनकी उपासना करना हमारे लिए कठिन हो जाता है । इस दृष्टिसे इस ग्रंथमें उनके विविध गुण, विशेषताएं, कार्य, मनुष्यके साथ उनका संबंध आदि जानकारीके साथ, उनके संदर्भमें साधकोंकी अनुभूतियां भी दी हैं ।

इस ग्रंथको पढकर अधिकाधिक लोगोंकी ईश्वरके प्रति उपासना दृढ हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । **– संकलनकर्ता.**